जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

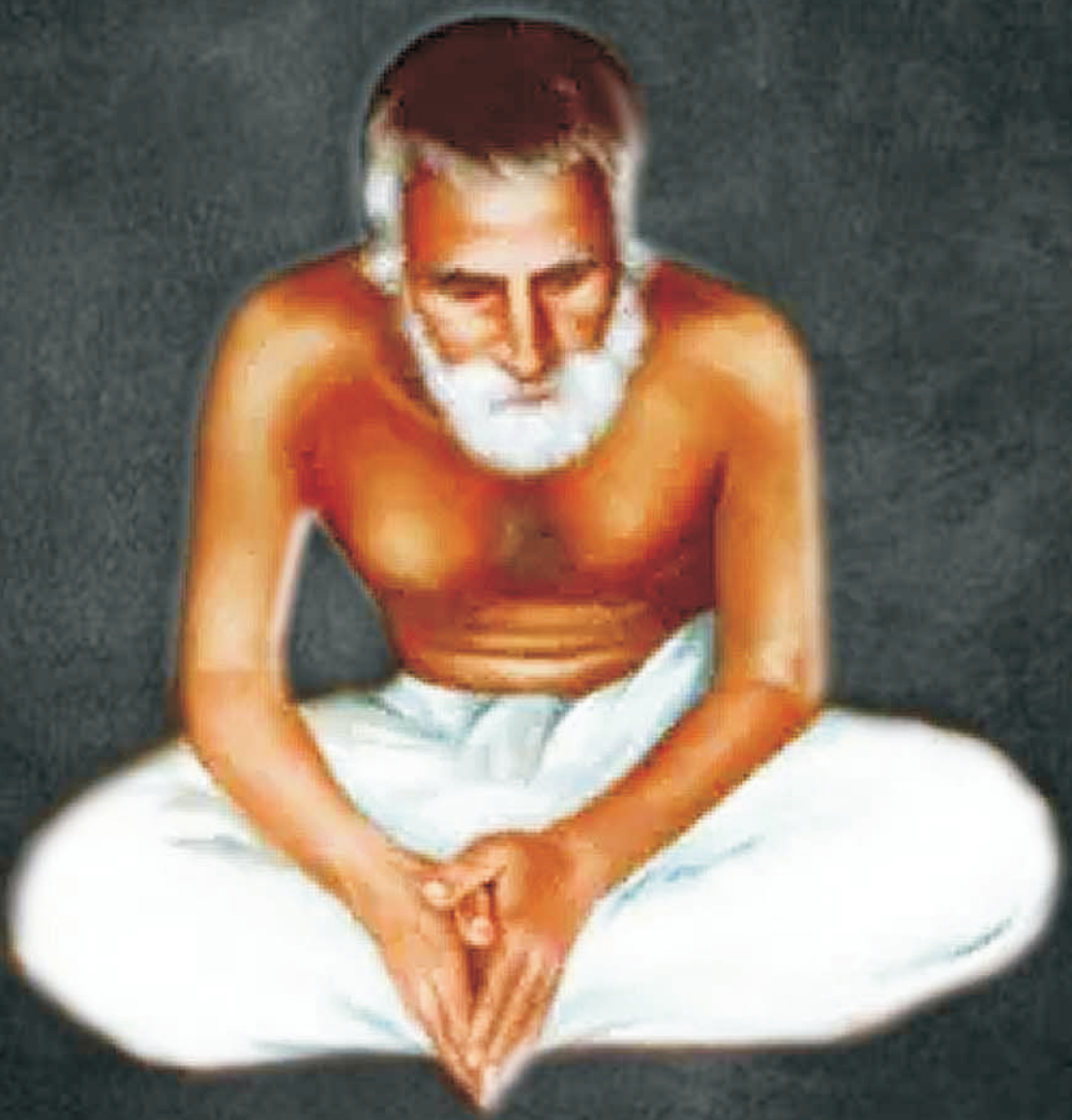

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

स्वकर्मफल भुक् पुमान्

श्री श्रीगुरु-गौरांगौ जयतः

प***' नाम के एक युवक ने बाबाजी महाराज के पास आकर हरिभजन करने की इच्छा प्रकाशित की। यह सुनकर बाबाजी महाराज ने कहा– "आप यदि अन्य जागतिक लोक-प्रचारित वैष्णव और अवैष्णवों का संग परित्याग करके मेरे पास सब समय रहेंगे, तभी यहाँ पर हरिभजन कर सकेंगे। मैं धामवासियों द्वारा

परित्यक्त 'जूठा' अन्न, श्रीधाम की रज से निर्मित बर्तन और मृत व्यक्तियों के वस्त्रों के द्वारा गुज़ारा करता हूँ। आप यदि किन्हीं अन्य धार्मिक या वैष्णव- व्यक्तियों के साथ मिलेंगे तो हो सकता है कि वे लोग आपको अस्पृश्य जानकर परित्याग कर दें, चाहे आपका ही उनको स्पर्श करने में अपराध हो जाए।" प***' ने कहा, आपने जो कुछ कहा है, मैं वही करूँगा। लेकिन वह युवक कुछ दिनों बाद 'रा***' के कण्ठ-स्वर से मुग्ध होकर 'रा***' के साथ श्रील

बाबाजी महाराज को बिना बताए इस कीर्तन में जाने लगा एवं उनके साथ प्रसाद आदि लेने लगा। उनसे एक जोड़ा करताल भी ले आया। बाद में एक दिन सन्ध्या के समय बाबाजी महाराज जिससे सुन सकें उस तरीके से वह करताल बजाकर कीर्तन करने लगा। और एक दिन वह प्रातः गंगास्नान करके बाबाजी महाराज को सुनाने के लिए उच्चः स्वर से वैष्णव वंदना पाठ करने लगा। प**' जब भिक्षा के लिए बाहर गया, तब श्रील बाबाजी महाराज जी ने पास खड़े एक सेवक

को बुलाकर कहा– "प***' छिप-छिपकर 'रा***' के घर पर जाता है एवं उसने उसी स्थान से यह सब भक्ति {?} संग्रह की है, वह इस जगह पर प्रचार करने की चेष्टा कर रहा है। वस्तुतः वह हरिभक्ति के बदले अपराध संचय कर रहा है।" यह सुनकर एक व्यक्ति ने बाबाजी महाराज को कहा– "आपको उसकी यह सब बातें किसने बताई?" श्रील बाबाजी महाराज ने कहा- "मुझे उसके कीर्तन और वैष्णव-वन्दना का ढंग देखने से ही उसके अन्दर

का परिचय मिल गया है, इसे और यहाँ रखा नहीं जाएगा, क्योंकि एक बार लोग यदि दुसंग कर लें– वैष्णवों का नाम कर अवैष्णवों का संग कर लें– वह और कोई बात नहीं मानेगा, केवल कपटता ही सीखेगा।" इसके बाद एक दिन श्रील बाबाजी महाराज को बिना बताए वह युवक हठात् पुरी चला गया। श्रील बाबाजी महाराज दुःख व्यक्त करके कहने लगे– "लड़के को वे लोग भगाकर ले गये हैं, उसका भी खाने-पीने का लोभ था। मैं उसकी रक्षा नहीं कर पाया।

जीव स्वतन्त्र और अपने कर्मों का फल भोगने वाला है। वह कृष्ण की प्रेरणा से मेरे पास आया था लेकिन छिपकर दूसरों का संग करने के कारण अधिक विपत्ति में पड़ गया। अब 'भेक' {बंगाल में बाबाजी वेष को 'भेक' कहते हैं। लेकिन बाबाजी महाराज उस 'भेक' शब्द से मेंढक समझते थे।} ग्रहण कर वह 'वैष्णव' सजेगा। इस प्रकार से जगत के अनिष्टकारी लोग जिस किसी को भी 'वेष' देकर 'मेंढक' बना देते हैं। लोगों का प्रणाम ग्रहण, विभिन्न प्रकार की उत्तम

वस्तुओं का भोजन आदि के लोभ में कपटी लोग इसी प्रकार 'वैष्णव' सजकर बैठ जाते हैं। ये जो सब हरिनाम कीर्तन की छलना करते हैं, वह मेंढक का कोलाहल मात्र है। ये जितना शोर मचाते हैं, उतना ही विषय रूपी सर्प इन्हें ग्रास कर लेता है।"

कुछ महीनों बाद वह युवक पुरी से 'वेष' ग्रहण करके नवद्वीप में वापिस आया एवं नवद्वीप की भ– कुटीर के महन्त को साथ लेकर श्रील बाबाजी महाराज के पास आया। महन्त जी ने श्रील

बाबाजी महाराज को प्रणाम करके कहा– आपका शिष्य प***' अभी पुरी से 'वैष्णव' {?} होकर आया है, वह अब धन्य हो गया है, वह ठाकुर हरिदास की सेवा करके आया है एवं खूब अनुराग के साथ भजन कर रहा है।' श्रील बाबाजी महाराज ने कहा– "वह मेरा किस प्रकार से शिष्य हुआ, मैं तो समझ नहीं पा रहा हूँ। जगत में मैं तो किसी को भी शिष्य के रूप में नहीं देखता, मैं स्वयं ही शिष्य नहीं हो पाया हूँ, किस प्रकार दूसरों का गुरु बनूँगा? मेंढक की पोषाक पहनने

से क्या वैष्णव हुआ जाता है? मेंढक की आवाज़ हरिनाम या हरिभजन नहीं है। मेंढक का जो अनुराग है, वह केवल सुखभोग के लिए है, लेकिन वह सुख भोग नहीं कर पाता, विषयरूपी सर्प उसको ग्रास कर लेता है। हरिदास ठाकुर की सेवा करना क्या केवल मुरव की बात है? आप महन्त बनकर क्यों अपनी परमायु वृथा नष्ट कर रहे हैं। यह सब त्याग करके शद्धभाव से हरिभजन करो।"

महन्त ने कहा– "मेरा महन्त होने का कोई उद्देश्य नहीं है, केवल

भजन कुटीर की उन्नति करना और वैष्णव सेवा ही मेरा उद्देश्य है। भजन-कुटीर का सारा स्थान जंगल से भर गया है, मैंने उस जंगल को काटकर स्थान को परिष्कार किया है।" यह बात सुनकर श्रील बाबाजी महाराज अत्यन्त दुःखी हुए व इस व्यक्ति के साथ और कोई बात ही नहीं की। उसके चले जाने के बाद श्रील बाबाजी महाराज ने पास बैठे व्यक्ति को कहा– "इस नवद्वीप के कल्पवृक्ष, कल्पलता समूह को इस पाषण्डी ने निष्ठुरता से काटा,

और तो और यह मुझे सुनाकर चला गया। हाय हाय ! देखो देखो ! इस नवद्वीप के इन शुष्क वृक्षों को काटते ही प्राण व्यथित हो जाते हैं। यह सब वृक्ष लता हमारे नित्यबन्धु बान्धव हैं, वे गौर-लीला के उपकरण हैं। बन्धु बान्धव के मरने पर भी क्या उनके मृत शरीरों पर कोई अस्त्र से आघात कर सकता है? ये सब निष्ठुर व्यक्ति कभी भी हरिभजन में अधिकारी नहीं हो सकते, केवल बाहर से वैष्णवता का ढोंग मात्र प्रदर्शन कर अपना और दूसरों

का अमंगल करते हैं।

श्रीलगुरुदेव